IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

निशांत कुमार यादव
शोधार्थी
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

डॉ. शांति तेजवानी
प्राचार्य
वैष्णव टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, इन्दौर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र आचार्य रजनीश के शिक्षा दर्शन में निहित समाजशास्त्रीय विचारों के परिप्रेक्ष्य पर आधारित है। आधुनिक भारत में अनेक महान क्रान्तिकारी विचारक हुए हैं, आचार्य रजनीश उन सभी में अद्वितीय हैं। आचार्य रजनीश के अनुसार समाज के स्वस्थ विकास के लिए भौतिक समृद्धि के साथ—साथ मानसिक समृद्धि का विकास भी आवश्यक है, भौतिक जगत में तो बच्चे अपनी समृद्धि को बढ़ा लेते हैं, परन्तु मानसिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास उनसे पीछे छूट जाता है, सामाजिक विकास के लिए यह आवश्यक है, कि पुरानी परम्पराओं, पुराने विचारों तथा मान्यताओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखना होगा, किसी भी विचार को नये बच्चों के मस्तिष्क में प्रवेश करवाने से पूर्व उसकी उपयोगिता को ध्यान में रखना होगा, शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे समाज की संरचना ऐसी निर्मित हो जिसमें नवीन विचारों को आत्मसात करने की योग्यता विकसित हो सके। उन्होंने नारी शिक्षा के लिये सुझाव दिया कि उन्हें उनकी प्रकृति के अनुरूप शिक्षा दी जाये एवं बच्चों के विकास के लिये अभिभावकों को भी शिक्षा दी जाये, जब इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली होगी तब स्वस्थ समाज का विकास संभव होगा।

प्रस्तावना

आचार्य रजनीश का जन्म मध्यप्रदेश के एक गाँव के साधारण परिवार में हुआ था। अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में ही आचार्य रजनीश बड़ी बेबाकी, निर्भीकता तथा स्वतंत्र चेतना से प्रभावित होकर अपने विचारों को प्रस्तुत करते थे, खतरों से खेलना उनको प्रिय था। युवावस्था में आचार्य रजनीश द्वारा अपनी अलौकिक बुद्धि तथा दृढ़ता का परिचय देते हुए, कई धार्मिक नेताओं

जो बिना किसी स्वअनुभव के ही भीड़ के अगुवा बन गये थे उन सभी की मूढ़ताओं तथा पाखंडों का पर्दाफाश किया।

21 मार्च 1953 को 21 वर्ष की अवस्था में आचार्य रजनीश को संबोधि की प्राप्त हुयी, उसके पश्चात जब तक वे जीवित रहे एवं अपने विचारों से देश को ही नहीं वरन् दुनिया के कई देशों को आलोकित किया। आचार्य रजनीश द्वारा केवल धर्म दर्शन पर ही नहीं वरन् जीवन के सभी आयामों जैसे योग, तंत्र, साधना, संगीत सूफी, हसीद, ताओ, कला, राजनीति, विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, परिवार, विवाह, गरीबी, जनसंख्या, पर्यावरण, विज्ञान व तकनीकी, संस्कृति आदि विषयों पर क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किये।

शोधार्थी द्वारा आचार्य रजनीश के शैक्षिक दर्शन तथा समाजशास्त्रीय विचारों से संबंधित कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों से विषय वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया। जिसमें त्रिवेदी (1988), प्रजापति (1992), वर्मा (1994), सोनी (1992), जोशी (2002), पटेल (2006), मेघा (2007), प्रजापति (2011), पाटील (2017) की समीक्षा की गई। शोध अध्ययन के पुनरावलोकन की समीक्षा के उपरान्त शोधार्थी द्वारा आचार्य रजनीश के द्वारा प्रस्तुत किये गये सामाजिक तथा शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना शोधार्थी का अभिधेय था।

समस्या कथन

आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1) आचार्य रजनीश के दार्शनिक विचारों का समाज के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
2) आचार्य रजनीश के विचारों में परिलक्षित अभिभावकों की शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।
3) आचार्य रजनीश के दार्शनिक विचारों में नारी शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि तथा स्त्रोत

प्रस्तुत शोध पत्र का विषय ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। अतः शोधार्थी द्वारा अध्ययन में ऐतिहासिक उपागम द्वारा आचार्य रजनीश के कार्यों तथा प्रवचनों का विश्लेषण कर समीक्षा की गयी। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु प्रपत्रों के संकलन हेतु शिक्षा में क्रांति, शिक्षा में नए प्रयोग तथा शिक्षा : ओशो की दृष्टि में पुस्तकों का अध्ययन किया गया तथा साथ ही पूर्व में किये गए आचार्य

रजनीश के शैक्षिक तथा दर्शनिक शोध अध्ययनों का अध्ययन करने के साथ–साथ यू–ट्यूब पर उपलब्ध प्रवचनों को देखा तथा सुना गया।

आचार्य रजनीश के शैक्षिक विचारों में परिलक्षित सामाजिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण

शोध अध्ययन का प्रथम उद्देश्य, द्वितीय उद्देश्य तथा तृतीय उद्देश्य का क्रमवार विश्लेषण विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है।

शिक्षा तथा समाज

आचार्य रजनीशके शब्दों में – ''समाजशास्त्र जो समाज के सम्बन्ध में अध्ययन करता है, वह भी अत्यन्त रूग्ण है तथा अस्वस्थ है। अन्यथा मनुष्य जाति उसका जीवन उसके विचार बहुत अलग हो सकते हैं, जिन लोगों के लिए समाधान महत्वपूर्ण हो जाते हैं तथा समस्यायें कम महत्व की हो जाती है।'' **(शिक्षा : नये प्रयोग, पृ.सं.–82)**

समाज अपने बच्चों के मस्तिष्क में सारी पुरानी धारणाएँ छोड़ जाना चाहता है। हिन्दु अपने बेटे को हिन्दु, मुस्लिम अपने बेटे को मुस्लिम ही बनाना चाहता है। दोनों अपनी ईर्ष्या, रंज तथा अंधश्रद्धाएँ नयी पीढ़ी में बलपूर्वक हस्तांरित करना चाहते हैं, अपने शास्त्रों को बलपूर्वक मानने के लिए प्रेरित करते हैं, इस कार्य में वह शिक्षा का सहारा लेते हैं। जब तक अतीत के भार से बच्चों को मुक्त नहीं कर दिया जाता उनमें स्व चेतना का विकास संभव नहीं है। अतः उनका कहना है कि हमें बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे वे किसी भी घटना, विषयवस्तु पर पुनः स्व विवेक से सोच विचार कर सकें।

अभिभावकों का स्वरूप

आचार्य रजनीश का विचार है कि अभिभावकों को इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए कि उन्हें बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना है, जिससे बच्चे कुछ सीख पाएँ, बच्चों को बलपूर्वक कोई कार्य नहीं कराकर इन्हें स्वतंत्रता देकर प्रेमपूर्वक कार्य कराना चाहिए, बच्चों को स्वतंत्रता देनी चाहिए तथा इस स्वतंत्रता में भूल करने की स्वतंत्रता को भी शामिल करना चाहिए तथा बार–बार गलती करना मूर्खता है। ये बात बच्चों को समझानी चाहिए, अभिभावक का मूल कार्य बच्चों को गलत रास्ते पर जाने से रोकना है, उनके लिए कोई निर्धारित सोच नहीं देनी चाहिए तथा उसका हर प्रकार से सहयोग करना चाहिए।

नारी का स्वरूप

नारी के सम्बन्ध में आचार्य रजनीश का विचार है कि ''नारी तथा पुरूष में प्राकृतिक रूप से, संरचनात्मक रूप से, स्वाभाविक रूप से, मौलिक अंतर है। दोनों की आवश्यकताएँ भिन्न–भिन्न होती हैं। अतः नारी को पुरूषों के समान शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए, लेकिन आज की होड़ में यह अंतर भुला दिया गया है। परिणाम स्वरूप स्त्रियाँ, पुरूष बनने की होड़ में शामिल हो गयी हैं तथा उनका स्वाभाविक विकास अवरूद्ध हो गया है, उन्हें उनके स्वभाव के अनुरूप शिक्षा देनी चाहिए।'' **(शिक्षा में क्रांति–16)**

उनके अनुसार स्त्रियों के महत्वपूर्ण गुणों में मातृत्व, प्रेम, स्नेह, शालीनता, सृजनशीलता आदि की प्रधानता होती है, आधुनिक प्रचलित शिक्षा व्यवस्था से उनके ये सभी गुण नष्ट होते जा रहे हैं, उनके जीवन में जो भी गौरवपूर्ण पालन करने की तथा सृजन करने की क्षमता थी सब उनसे छिनती जा रही है। जिसका परिणाम यह है कि घर तथा परिवार टूट रहे हैं,परिवार समाज की प्रथम इकाई है अगर यह टूट जायेगी तो समाज कैसे खड़ा रह पायेगा। यदि नारी अशिक्षित होगी तो समाज भी अशिक्षित होगा। अशिक्षित नारी का मतलब है – अशिक्षित माँ, अशिक्षित पत्नी, अशिक्षित बेटी, अशिक्षित बहन। उन्हें उनक प्रकृति के अनुरूप शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।

उपसंहार

समाज में जो सम्प्रदाय, धर्म, जाति व वर्ग के आधार में विभिन्नताएँ हैं, उसके कारण समाज का स्वस्थ विकास नहीं हो पाता है, समाज के स्वस्थ विकास हेतु बच्चों में स्वतंत्र चेतना की भावना का विकास करना आवश्यक है, अभिभावकों तथा शिक्षकों का यह कर्तव्य है, कि छोटी–छोटी बातों के लिए भी बच्चों को पर्याप्त स्वतंत्रता दें, कोई भी पूर्व निर्धारित सोच देने से बच्चों को बचाना चाहिए, उनका हर प्रकार से सहयोग करना चाहिए। अभिभावकों को बालकों की स्वतंत्र चेतना का सम्मान करते हुए उनकी स्वाभाविक प्रकृति का सम्मान करना चाहिए। नारी की शिक्षा के सम्बन्ध में आचार्य रजनीश का विचार है कि नारी के द्वारा पूरी पीढ़ी शिक्षित होती है, यही परिवार तथा समाज का आधार है, नारी यदि शिक्षित होगी तो समाज भी पूर्ण समृद्ध तथा सुखी होगा, अतः नारी को उनकी प्रकृति के अनुरूप शिक्षा देना चाहिए।

संदर्भ

1) ओशो (2008), शिक्षा में क्रांति, रेबल पब्लिशिंग हाऊस, पूना दसवां संस्करण।

2) ओशो (2010), शिक्षा : ओशो की दृष्टि में, फ्यूजन बुक्स, ओखला इंडस्ट्रियल, फेज–II, नई दिल्ली।

3) रजनीश (2002), जीवन रहस्य, रेबल पब्लिशिंग हाऊस, पूना द्वितीय संस्करण।

4) ओशो वर्ल्ड (2020), ओशो वर्ल्ड फांउेशन, नई दिल्ली।

5) ओशो टाईम्स (2012), ताओ पब्लिशिंग हाऊस, पूना।